Date - 14 March 2022

पर-तापी-नर्मदा नदी लिंक परियोजना

- हाल ही में कुछ आदिवासियों ने पार-तापी-नर्मदा नदी लिंक परियोजना के खिलाफ अपना विरोध तेज कर दिया है, जिसका उल्लेख वित्त मंत्री के बजट भाषण (2022-23) में किया गया था।

पृष्ठभूमि:

- इन परियोजनाओं को वर्ष 2010 में मंजूरी दी गई थी, जब केंद्र सरकार, गुजरात और महाराष्ट्र के बीच एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- वित्त मंत्री ने अपने बजट भाषण में कहा कि राज्यों की सहमति के बाद पांच नदियों को जोड़ने की परियोजनाएं शुरू की जाएंगी.
- ये परियोजनाएं हैं दमनगंगा-पिंजाल, पर-तापी-नर्मदा, गोदावरी-कृष्णा, कृष्णा-पेन्नार और पेन्नार-कावेरी।
- केन-बेतवा नदी को आपस में जोड़ने की सरकार की परियोजना राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के तहत पहली परियोजना है।
- राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजना (एनआरएलपी), जिसे औपचारिक रूप से राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के रूप में जाना जाता है, का उद्देश्य देश के 'जल अधिशेष' नदी घाटियों (जो बाढ़ की संभावना है) को 'दुर्लभ' नदी घाटियों में परिवर्तित करना है। (जहां पानी की कमी या सूखा हो) ताकि अतिरिक्त पानी को अधिशेष क्षेत्रों से कम पानी वाले क्षेत्रों में स्थानांतरित किया जा सके।

पर-तापी-नर्मदा नदी लिंक परियोजना:

- पार-तापी-नर्मदा लिंक परियोजना में पश्चिमी घाट के जल अधिशेष क्षेत्रों से सौराष्ट्र और कच्छ (गुजरात) के पानी की कमी वाले क्षेत्रों में पानी स्थानांतरित करने का प्रस्ताव है।
- इस लिंक परियोजना में उत्तरी महाराष्ट्र और दक्षिणी गुजरात में प्रस्तावित सात जलाशय शामिल हैं।

Yojna IAS

- सात प्रस्तावित जलाशयों का पानी 395 किमी. लंबी नहर के माध्यम से संचालित सरदार सरोवर परियोजना (नर्मदा पर) को लघु मार्ग के क्षेत्रों की सिंचाई करते हुए लिया जाएगा।
- योजना में प्रस्तावित सात बांध हैं झेरी, मोहनकवचली, पाइखीड, चासमांडावा, चिक्कर, डाबदार और केलवान।
- इससे सरदार सरोवर का पानी बचेगा जिसका उपयोग सौराष्ट्र और कच्छ क्षेत्र में सिंचाई के लिए किया जाएगा।
- इस लिंक में मुख्य रूप से सात बांध, तीन डायवर्जन वियर, दो सुरंग और 395 किमी शामिल हैं। एक लंबी नहर के निर्माण, 6 बिजली घरों और कई क्रॉस-ड्रेनेज कार्यों की परिकल्पना की गई है।

परियोजना लाभ:

- सिंचाई लाभ प्रदान करने के अलावा, परियोजना चार बांध स्थलों पर स्थापित बिजली स्टेशनों के माध्यम से 00 MkWh जलविद्युत उत्पन्न करेगी।
- निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को भी बाढ़ से राहत मिलेगी|

नर्मदा नदी के बारे में:

- प्रायद्वीपीय क्षेत्र में नर्मदा पश्चिम की ओर बहने वाली सबसे लंबी नदी है। यह उत्तर में विंध्य श्रेणी और दक्षिण में सतपुड़ा श्रेणी के बीच एक भ्रंश घाटी से होकर बहती है।
- यह मध्य प्रदेश में अमरकंटक के निकट मैकाल श्रेणी से निकलती है।
- इसके अपवाह क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र और गुजरात में भी है।
- जबलपुर (मध्य प्रदेश) के पास, यह नदी 'धुआधार जलप्रपात' बनाती है।
- नर्मदा नदी के मुहाने में कई द्वीप हैं, जिनमें से सबसे बड़ा अलियाबेट है।
- प्रमुख सहायक नदियाँ: हिरन, ओरसंग, बरना और कोलार आदि।
- इंदिरा सागर, सरदार सरोवर आदि इस नदी के बेसिन में स्थित प्रमुख जल विद्युत परियोजनाएं हैं।

तापी / ताप्ती नदी:

- पश्चिम की ओर बहने वाली एक अन्य महत्वपूर्ण नदी मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के सतपुड़ा पर्वतमाला से निकलती है।
- यह नर्मदा के समानांतर एक भ्रंश घाटी में बहती है लेकिन इसकी लंबाई बहुत कम है।
- इसका बेसिन मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों को कवर करता है।

पर नदी:

- यह गुजरात में बहने वाली एक नदी है, जो महाराष्ट्र के नासिक के वडपाड़ा गांव के पास से निकलती है।
- यह अरब सागर में गिरती है।

Yojna IAS

नदी जोड़ने की परियोजना:

उद्देश्य:

- 'पानी की कमी' नदी घाटियों (जहां पानी की कमी या सूखे की स्थिति है) को देश के 'जल अधिशेष' नदी घाटियों (जहां बाढ़ की स्थिति प्रबल होती है) के साथ जोड़ना ताकि अधिशेष क्षेत्रों से अतिरिक्त पानी को डायवर्ट किया जा सके पानी कमी वाले क्षेत्रों में स्थानांतरित किया जा सकता है।

मांग:

- क्षेत्रीय असंतुलन को कम करना: भारत मानसूनी वर्षा पर निर्भर है जो अनियमित होने के साथ-साथ क्षेत्रीय रूप से भी असंतुलित है। नदियों को आपस में जोड़ने से अतिरिक्त वर्षा होगी और समुद्र में नदी के पानी के प्रवाह में कमी आएगी।
- कृषि सिंचाई: कमी वाले भारतीय कृषि क्षेत्रों में सिंचाई संबंधी समस्याओं को कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अधिशेष पानी के अंतरण से जोड़कर हल किया जा सकता है।
- जल संकट को कम करना: यह सूखे और बाढ़ के प्रभाव को कुछ हद तक कम करने में मदद कर सकता है।
- अन्य लाभ: इससे जलविद्युत उत्पादन, साल भर नौवहन, रोजगार सृजन, शुष्क वन और भूमि के रूप में पारिस्थितिक लाभों की भरपाई होगी।

चुनौतियां:

- पर्यावरणीय लागत: इस परियोजना से नदियों की प्राकृतिक पारिस्थितिकी के बाधित होने का खतरा है।
- जलवायु परिवर्तन: इंटरलिंकिंग सिस्टम में 'वाटर सरप्लस' बेसिन (जहां पानी की मात्रा अधिक है) से 'वाटर डेफिसिट' बेसिन में पानी का स्थानांतरण शामिल है।
- यदि जलवायु परिवर्तन के कारण किसी प्रणाली की मूल स्थिति में गड़बड़ी होती है तो उसकी अवधारणा अर्थहीन हो जाती है।
- आर्थिक लागत: अनुमान है कि नदियों को आपस में जोड़ने से सरकार पर भारी वित्तीय बोझ पड़ेगा।
- सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: अनुमान है कि लगभग 15000 कि.मी. नहरों के जाल से लगभग 55 लाख लोग विस्थापित होंगे, जिनमें से अधिकांश आदिवासी और कृषक वर्ग से प्रभावित होंगे।

Yojna IAS

मेरी फसल मेरा ब्योरा ई- खरीद पोर्टल

- हरियाणा सरकार ने 'मेरी फसल-मेरा ब्योरा ई- खरीद ' पोर्टल लॉन्च किया है। इस पोर्टल के माध्यम से हरियाणा भारत का पहला राज्य बन गया है जहां न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर 14 फसलों की खरीद की जाती है।
- इन फसलों में गेहूं, सरसों, जौ, चना, धान, मक्का, बाजरा, कपास, सूरजमुखी, मूंग, मूंगफली, अरहर, उड़द और तिल शामिल हैं।
- यह पोर्टल कृषि में सुधार और किसानों की आय में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल गवर्नेंस (ई-गवर्नेंस) को तेजी से अपनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पोर्टल से संबंधित प्रमुख बिंदु:

- पोर्टल को COVID-19 महामारी के मद्देनजर लॉन्च किया गया था।
- दो साल से भी कम समय में राज्य के कुल किसानों में से 71 लाख या 80% से अधिक किसानों ने रबी सीजन में पोर्टल पर पंजीकरण कराया।
- पोर्टल का उद्देश्य ऑनलाइन बिक्री को सुगम बनाना है, जिसके तहत राज्य की 81 मंडियों को 'ई-नाम' (इलेक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि बाजार) पोर्टल से जोड़ा गया है।
- 'ई-NAM' प्लेटफॉर्म एक अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग पोर्टल प्रदान करता है, जो कृषि उत्पादों के लिए एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाने के लिए मौजूदा एपीएमसी (कृषि उत्पाद बाजार कमोडिटीज) मंडियों को एक नेटवर्क में एक साथ लाता है।

फसलों की खरीद:

- उद्देश्य: खाद्यान्न की खरीद की सरकार की नीति का व्यापक उद्देश्य किसानों के लिए एमएसपी सुनिश्चित करना और कमजोर वर्गों को सस्ती कीमतों पर खाद्यान्न की उपलब्धता सुनिश्चित करना है।
- यह प्रभावी बाजार हस्तक्षेप भी सुनिश्चित करता है ताकि कीमतों को नियंत्रण में रखा जा सके और साथ ही देश की समग्र खाद्य सुरक्षा का ध्यान रखा जा सके।
- मूल्य समर्थन के तहत खरीद मुख्य रूप से किसानों को उनकी उपज के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने के लिए की जाती है जो बेहतर उत्पादन प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन के रूप में कार्य करता है।
- नोडल एजेंसी: भारतीय खाद्य निगम अन्य राज्य एजेंसियों के साथ मूल्य समर्थन योजना के तहत गेहूं और धान की खरीद के लिए भारत सरकार की नोडल केंद्रीय एजेंसी है।

Yojna IAS

- भारत सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार केंद्रीय पूल के लिए राज्य सरकार की एजेंसियों द्वारा मोटे अनाज की खरीद की जाती है।
- **CACP** की भूमिका: प्रत्येक रबी/खरीफ फसल के मौसम के दौरान कटाई से पहले, भारत सरकार कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) की सिफारिश के आधार पर खरीद के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की घोषणा करती है।
- राज्य सरकारों की भूमिका: खाद्यान्नों की खरीद को सुविधाजनक बनाने के लिए, एफसीआई और विभिन्न राज्य एजेंसियों ने राज्य सरकार के परामर्श से विभिन्न मंडियों में बड़ी संख्या में खरीद केंद्र स्थापित किए हैं।

ई-मंडी किसानों की कैसे मदद करेगी?

- बिचौलियों का एकाधिकार: मौजूदा बुनियादी ढांचे के साथ कृषि उपज केवल निकटतम कृषि बाजार तक पहुंचती है जो एपीएमसी (कृषि उपज बाजार वस्तु) के अधिकार क्षेत्र में है।
- यात्रा, पैकिंग और उपज की छंटाई के खर्च को पूरा करने के बाद, किसान स्थानीय मंडियों में पहुंच जाते हैं और खराब होने वाली वस्तुओं के बिकने का इंतजार करते हैं।
- किसानों को छँटाई, ग्रेडिंग और अन्य आवश्यक कृषि प्रक्रियाओं के लिए स्थानीय एजेंटों पर निर्भर रहना पड़ता है, इस प्रकार वे बिचौलियों पर बहुत अधिक निर्भर होते हैं जो हमेशा भरोसेमंद या ईमानदार नहीं होते हैं।
- किसानों के हितों के लिए हानिकारक: यह अघोषित एकाधिकार जो मौजूद है, जो कमोडिटी विकास और कृषि मूल्य श्रृंखला के मुक्त प्रवाह को प्रभावित करता है, स्थानीय किसानों और उनकी आजीविका के लिए भी हानिकारक है।

तकनीक कृषि की मदद कैसे कर सकती है?

- आधुनिक तकनीक की तैनाती: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ब्लॉकचेन, मशीन लर्निंग, क्लाइमेट-स्मार्ट एडवाइजरी, जियो-टैगिंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी तकनीकों का उपयोग करते हुए आधुनिक तकनीक और डिजिटल मशीनरी की शुरुआत के साथ, कृषि में निवेशकों की वृद्धि हुई है।
- हाल ही में, प्रधान मंत्री ने भारत के विभिन्न शहरों और कस्बों में भारत के खेतों में कीटनाशकों का छिड़काव करने के लिए 100 किसान ड्रोन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया है।
- किसानों को लाभ: डिजिटल मंडियां किसानों को थोक विक्रेताओं और अन्य स्थानीय व्यापारियों के साथ सीधे बातचीत करने में सक्षम बना रही हैं, इस प्रक्रिया में शामिल बिचौलियों को खत्म कर रही हैं, जो उनके आंदोलन और फसल के प्रकार, विविधता और मूल्य बिंदु के लिए जिम्मेदार हैं।

Yojna IAS

राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव (NYPF) 2022

- हाल ही में, राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव (NYPF), 2022 के तीसरे संस्करण के समापन समारोह को लोकसभा अध्यक्ष ने नई दिल्ली में संबोधित किया।
- राष्ट्रीय युवा संसद युवाओं को संसदीय और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की समझ से लैस करने के लिए एक अभिनव कार्यक्रम है।

राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव के बारे में:

- पृष्ठभूमि: एनवाईपीएफ वर्ष 2017 में प्रधानमंत्री द्वारा अपने 'मन की बात संबोधन' में दिए गए विचार पर आधारित है।
- उद्देश्य: 18-25 आयु वर्ग के युवाओं की आवाज सुनना, जिन्हें वोट देने की अनुमति है लेकिन चुनाव नहीं लड़ सकते।
- युवाओं को सार्वजनिक मुद्दों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना, आम आदमी के दृष्टिकोण को समझना, राय बनाना और उन्हें स्पष्ट रूप से व्यक्त करना।
- पिछला एनवाईपीएफ: एनवाईपीएफ का पहला संस्करण वर्ष 2019 में "नए भारत की आवाज बनें और समाधान खोजें और नीति में योगदान करें" विषय के साथ आयोजित किया गया था।
- एनवाईपीएफ का दूसरा संस्करण 2020 में आयोजित किया गया था, जिसका विषय "युवा – नए भारत का उत्साह" था।

मुख्य विशेषताएं:

- देश के सभी मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थान इस कार्यक्रम में भाग लेने के पात्र हैं।
- नौवीं से बारहवीं कक्षा के छात्रों के लिए किशोर सभा।
- स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों के लिए तरुण सभा।
- भागीदारी के लिए शैक्षणिक संस्थानों द्वारा वेब पोर्टल के माध्यम से पंजीकरण किया जाएगा।
- योजना के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए, प्रतिभागी संस्थान मुख्य अतिथि के रूप में एक सांसद/पूर्व सांसद/'पूर्व विधायक/एमएलसी/पूर्व एमएलसी या प्रतिष्ठित व्यक्ति को आमंत्रित कर सकते हैं जो युवा संसद के प्रदर्शन की देखरेख करेंगे।
- आयोजन: युवा मामले और खेल मंत्रालय।

YojnaIAS

मिसाइल परीक्षण

- हाल ही में, भारत ने स्वीकार किया है कि 'तकनीकी खराबी के कारण मिसाइल का आकस्मिक गोलीबारी हुई' जो पाकिस्तानी क्षेत्र में 124 किमी तक पहुंच गई।
- अनुमानों के अनुसार, यह भारत की शीर्ष मिसाइलों में से एक ब्रह्मोस का परीक्षण था, जिसे रूस के साथ संयुक्त रूप से विकसित किया गया है।

मिसाइल परीक्षण प्रावधान:

- वर्ष 2005 में हस्ताक्षरित 'बैलिस्टिक मिसाइल समझौते' की 'पूर्व-उड़ान परीक्षण अधिसूचना' के तहत, प्रत्येक देश को किसी भी भूमि या समुद्र से लॉन्च की गई सतह से सतह पर मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों के लिए उड़ान परीक्षण करने के लिए अग्रिम सूचना देनी होगी।
- परीक्षण से पहले, उस देश को क्रमशः विमानन पायलटों और नाविकों को सचेत करने के लिए एक नोटिस टू एयर मिशन (NOTAM) या नेविगेशनल अलर्ट (NAVAREA) जारी करना चाहिए।
- साथ ही परीक्षण देश को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रक्षेपण स्थल 40 किमी के भीतर नहीं है और प्रभाव का नियोजित क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय सीमा (आईबी) या नियंत्रण रेखा (एलओसी) के 75 किमी के भीतर नहीं है।
- नियोजित पथ को अंतर्राष्ट्रीय सीमा या नियंत्रण रेखा को पार नहीं करना चाहिए और सीमा से कम से कम 40 किमी की दूरी बनाए रखनी चाहिए।
- परीक्षण देश द्वारा "पांच-दिवसीय लॉन्च विंडो के शुरू होने से कम से कम तीन दिन पहले सूचित किया जाना चाहिए, जिसके भीतर वह किसी भी भूमि या समुद्र से लॉन्च की गई सतह से सतह पर मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइलों का संचालन कर सकता है" मिसाइल का परीक्षण करने का इरादा रखता है |
- पूर्व-सूचना "संबंधित विदेशी कार्यालयों और उच्चायोग के माध्यम से" संप्रेषित की जानी है।

वायु मिशनों को नोटिस **(NOTAMs)**

- NOTAMs का मतलब ऐसी जानकारी से है जिसमें किसी उड़ान के संचालन से संबंधित कर्मियों के लिए आवश्यक जानकारी शामिल है जो अन्य माध्यमों से प्रसारित होने के लिए पर्याप्त रूप से पहले से ज्ञात नहीं है।

वर्ल्ड वाइड नेविगेशनल वार्निंग सर्विस **(WWNWS)**

- वर्ल्ड वाइड नेविगेशनल वार्निंग सर्विस (WWNWS) की स्थापना वर्ष 1977 में दुनिया भर में अंतरराष्ट्रीय शिपिंग के नेविगेशन के खतरों के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए की गई थी।

Yojna IAS

- नौवहन संबंधी चेतावनियां महत्वपूर्ण घटनाओं की पूर्व चेतावनी प्रदान करती हैं जो नेविगेशन के लिए खतरा पैदा कर सकती हैं।
- कई नौवहन संबंधी चेतावनियां प्रकृति में अस्थायी होती हैं, लेकिन अन्य कई हफ्तों तक प्रभावी रहती हैं, जिसके बाद नाविकों को नोटिस (NM) प्राप्त होते हैं।

ब्रह्मोस मिसाइल:

- ब्रह्मोस भारत के रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) और रूस के एनपीओएम के बीच एक संयुक्त उद्यम है।
- ब्रह्मोस का नाम ब्रह्मपुत्र और मोस्कवा नदियों के नाम पर रखा गया है।
- यह दो चरणों वाली (पहले चरण में ठोस प्रणोदक इंजन और दूसरे में तरल रैमजेट) मिसाइल है।
- यह एक मल्टीप्लेटफॉर्म मिसाइल है यानी इसे जमीन, हवा और समुद्र और बहु-क्षमता वाली मिसाइल से सटीकता के साथ लॉन्च किया जा सकता है, जो दिन-रात किसी भी मौसम में काम करती है।
- यह 'आग और भूल जाओ' के सिद्धांत पर काम करता है यानी लॉन्च के बाद इसे मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं होती है।
- ब्रह्मोस सबसे तेज क्रूज मिसाइलों में से एक है, यह वर्तमान में मच 8 की गति से संचालित होती है, जो ध्वनि की गति से लगभग 3 गुना है।

Swadeep Kumar

Yojna IAS